प्रौढ़ शिक्षा माला, संख्या १६४
भारत सरकार द्वारा स्वीकृत

रामायण

पहला भाग

Sharika Library ... Reading Room
Dated
JAMMU.
Sharika Rehari.

इदारा तालीम व तरक्की
जामिआ, देहली

मक्तबा जामिआ लि०, देहली

जागो और जगाओ

दो शब्द

SABHA AMBPHALLA
LIBRARY
No
JAMMU

इस पुस्तक-माला का उद्देश्य है कि कम पढ़े लिखे सियानों में :

(१) पुस्तकें, अखबार और पत्रिकाएं आदि पढ़ने और समझने की योग्यता बढ़े।

(२) जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बातों के बारे में बुनियादी जानकारी, और शब्द-भण्डार प्राप्त हो।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये, इदारा तालीम-व-तरक्की जामिआ (प्रौढ़ शिक्षा विभाग, जामिआ मिल्लिया) देहली ने १० साल तक सियानों में काम करने के बाद उनकी शिक्षा का एक पाठ्य-क्रम तैयार किया है। वह इस पाठ्य-क्रम के अनुसार सियानों की रुचि और लाभ, उनकी मानसिक योग्यता और शौक को ध्यान में रखकर छोटी-छोटी पुस्तकें प्रस्तुत करवा रहा है। अब तक इस विषय की ३०० पुस्तकों के मसविदे हिंदी में तैयार हो चुके हैं।

भारत सरकार की एजुकेशन मिनिस्टरी के हम आभारी हैं कि उसने हमारे इस परीक्षण को पसन्द किया। उसकी आर्थिक सहायता से ही हम ये पुस्तकें आपको भेंट कर रहे हैं।

शफ़ीकुर रहमान किदवाई (डायरेक्टर)
मुश्ताक अहमद (प्रधान सम्पादक)
वाई सुरेन्द्रपाल (सम्पादक)
जिनेन्द्र कुमार ,,
नगीन चन्द ,,

रामायण

पहला भाग

तुलसीदास जी का परिचय

गोस्वामी तुलसीदास जी हमारे देश के बहुत ऊंचे दर्जे के कवि और संत हुये हैं । उनकी लिखी रामायण आज भी देश के कोने कोने में बड़ी भक्ति, आदर और चाव से पढ़ी जाती है। वे लगभग पौने चार सौ वर्ष पहले राजापुर नाम के नगर में पैदा हुये थे। उन दिनों हमारे देश में बादशाह अकबर का राज था ।

तुलसीदास जी की माता का नाम हुलसी और पिता का नाम आत्माराम दूबे था। बचपन में तुलसीदास का नाम तुलाराम था और शायद इसी नाम के आधार पर आगे चल कर वे तुलसीदास कहलाये ।

छोटी उम्र में इनके माता-पिता मर गये थे ।

तभी पांच छै वर्ष की उमर से ही ये साधु संतों की संगत करने लगे थे। बड़े होने पर इनका विवाह होगया । इनकी स्त्री का नाम विद्या-

वती था। और ये उसे बेहद प्यार करते थे। सच तो यह है कि विद्यावती के प्रेम ने ही तुलाराम को तुलसी बना कर उनसे रामचरित मानस[१] और दूसरी ऊंची से ऊंची किताबों की रचना कराई।

कहते हैं एक बार विद्यावती बहुत दिनों तक इनके पास रह कर अपने मायके गई। ये उसकी जुदाई को सहन न कर सके और अगले ही दिन रात के समय अपनी ससुराल जा पहुँचे। पर रात होने के कारण घर के दरवाजे बंद हो चुके थे। पानी बरस रहा था, पर तुलसी प्रेम में पागल अपनी प्यारी के पास पहुंचने का ढंग सोच रहे थे और उसके मकान के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे। इसी समय घर की ऊंची दीवार से एक बड़ा लंबा सांप लटकता दिखाई दिया। तुलसी दास जी उसे कमंद समझ उसी के सहारे ऊपर चढ़ गये। ऊपर पहुँच कर उन्होंने अपनी प्राण प्यारी को जगाया। पहले तो वह उन्हें देख कर बहुत चकराई, फिर यों बोली:

लाज न लागत आप को,
दौरे आयहु साथ ।

---

१. तुलसी दासजी की रामायण का असली नाम यही है।

धिक् धिक् ऐसे प्रेम को,
कहा कहौं मैं नाथ ॥
अस्थि चर्म मय देह मम,
तामें जैसी प्रीत ।
तैसी जो श्री राम मंह,
होति न तो भव भीति ॥

मेरे स्वामी ! आपको लाज नहीं आती जो मेरे साथ ही साथ दौड़े आये। लानत है ऐसे प्रेम पर। बस इससे ज्यादा और क्या कहूँ। हाड़ चाम की बनी मेरी देह से आपका जैसा प्यार है, अगर वैसा प्यार श्री राम से होता, तो आप जन्म मरण के चक्कर से ही छूट जाते।

अपनी ही प्राण प्यारी के मुख से निकले ये वचन तुलसी के मन में तीर की तरह लगे। स्त्री के प्रेम ने ही महाकवि सूरदास और महाकवि तुलसी दास को हमारे देश के सबसे ऊंची चोटी के कवि, भक्त और महात्मा बनाया। स्त्री की बात सुनते ही तुलसी का मन संसार के प्रेम को छोड़ भगवान् के प्रेम में मग्न हो गया। वे उल्टे पांव वहां से चल दिये और काशी पहुंच कर भगवान् की भक्ति में लीन होगये।

फिर सारी उम्र रामायण और दूसरी पुस्तकें

लिखने और भगवान् की भक्ति में बिताई। अंत में ६१ वर्ष की उम्र पाकर संवत् १६८० विक्रमी सन् १६२३ ई० में काशी में उनका स्वर्गवास हुआ। उनका अंतिम दोहा यह है:—

राम नाम जस वरन के
भयो चहत अब मौन।
तुलसी के मुख दीजिये,
अब ही तुलसी सौन॥

आज भारत में वह कौनसा आदमी है जो चाव से राम चरित मानस न सुनता हो। हमारे देश में आज तुलसी की रामायण का जितना आदर है उतना गीता को छोड़ कर और किसी पुस्तक का नहीं है। हर घर में रामायण मिलेगी। यों तो सदा ही, पर खास तौर पर चैत के महीने में शुक्लपक्ष की नवमी को, हिन्दुओं के हर मन्दिर और घर में रामायण की कथा होती है। क्योंकि इसी दिन श्रीराम का जन्म हुआ माना जाता है। रामायण के ही शब्दों में, हिन्दुओं का विश्वास है कि—

बुध बिसराम सकल जन रंजनि,
राम कथा कलिकलुष बिभंजनि।

राम कथा कलियुग के पापों का नाश करने

वाली है। बड़े बड़े विद्वानों को इससे चैन मिलता है और सब लोगों के मन को खुशी हासिल होती है।

अब आप तुलसीदास जी की कविता का रस उठाइए।

श्री रामचन्द्रजी का जन्म

नवमी तिथि मधुमास पुनीता।
शुक्ल पच्छ अभिजित् हरि प्रीता॥
मध्य दिवस अति सीत न घामा।
पावन काल लोक विश्रामा॥

चैत के पवित्र महीने के शुक्लपच्छ (उजाला पाख) की नवमी तिथि को अभिजित् नच्छत्र के समय जो भगवान् को बहुत प्यारा है, दोपहर को, जब न अधिक सर्दी थी न गरमी, संसार को सुख देने वाला, पवित्र सुहावना समय था,

सीतल मंद सुरभि बह बाऊ।
हरषित सुर संतन मन चाऊ॥
बन कुसुमित गिरिगन मनि-आरा।
स्रवहिं सकल सरितामृतधारा॥

ठंडी, धीमी और सुगन्धित हवा चलने लगी। देवताओं और सज्जनों के मन खुशी से भर गये। वनों में भांति भांति के फूल खिल उठे, पहाड़ों में

तरह तरह के हीरे जवाहरात की खानें उभर आईं और नदियों में अमृत की धारा बहने लगी।

सो अवसर बिरंचि जब जाना।
चले सकल सुर साज बिमाना॥
गगन बिमल संकुल सुर जूथा।
गावहिं गुन गंधर्व बरूथा॥

ऐसी सुहावनी ऋतु को देख कर ब्रह्माजी स्तुति करने को चले। सब देवता भी अपने अपने उड़न खटोले सजा सजा कर उनके साथ हो लिये। निर्मल आकाश देवताओं के झुंडों से भर गया और गंधर्वों के दल के दल गीत गाने लगे।

बरषहिं सुमन सुअंजलि साजी।
गह गह गगन दुंदुभी बाजी॥
अस्तुति करहिं नाग मुनिदेवा।
बहु बिधि लावहिं निज निज सेवा॥

सब देवता अंजली भर भर कर फूल बरसाने लगे, आकाश में खुशी के नगाड़े बज उठे। नाग, मुनि और देवता श्रीराम की स्तुति करने लगे और तरह तरह से उनकी सेवा करने में जुट गये।

सुर समूह बिनती करी,
पहुँचे निज निज धाम।

जग निवास प्रभु प्रगट भे,
अखिल लोक विश्राम ॥

श्रीराम की सेवा और स्तुति करके सब देवता अपने अपने स्थान को वापिस चले गये। तब सारे संसार को सुख देने वाले भगवान् श्रीराम जी ने जन्म लिया।

श्री रामचन्द्रजी और सीताजी की पहली भेंट

बड़े होकर रामचन्द्रजी ने अपने भाइयों के साथ गुरु वशिष्ठ से रणविद्या और दूसरे ज्ञान सीखे।

विश्वामित्र मुनि श्रीरामजी और लक्ष्मणजी को अपने आश्रम ले गये। वहां इन्होंने कई राक्षसों को मारा। वहां से मुनि विश्वामित्र के साथ दोनों भाई मिथिला गये। वहां मिथिला की राजकुमारी सीता का स्वयंवर था।

मिथिला घूमते घूमते दोनों भाई एक फुलवारी में जा निकले। वहां पार्वतीजी का एक मन्दिर था। सीताजी अपनी सखियों समेत पूजा को आई थीं। वहां श्रीरामचन्द्रजी और सीता जी पहले पहले एक दूसरे को देखते हैं।

मज्जन करि सब सखिन्ह समेता,

गई मुदित मन गौरि निकेता।

पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा,

निज अनुरूप सुभग वर मांगा ॥

सखियों सहित तालाब में स्नान करके सीताजी प्रसन्न मन से शिवजी के मन्दिर में गईं उन्होंने बड़े प्रेम से पूजा की और अपने योग्य वर मांगा।

इधर तो सीता जी पार्वतीजी की पूजा से निबटीं, उधर उनकी एक सहेली उन्हें छोड़ फुलवारी देखने निकल गई। घूमते घूमते उसकी नज़र श्रीराम और लक्ष्मण पर पड़ गई। उन्हें देख कर वह बहुत प्रसन्न हुई। वह प्रेम में मग्न हो कर भागी भागी सीता जी के पास आई और श्रीरामचन्द्र जी और लक्ष्मण जी के बारे में बताया—

"देखन बाग कुंअर दोउ आए,

वय किसोर सब भांति सुहाए।

स्याम गौर किमि कहौं बखानी,

गिरा अनयन नयन बिनु बानी" ॥

सखियों! दो कुमार फुलवाड़ी देखने आये हैं। जो अति सुन्दर और जवान हैं। उनके श्याम और गोरे रंग का बयान मैं कैसे करूं? इस लिये

कि जीभ की आंखें नहीं और आंखों की जीभ नहीं।

सुनि हरषित सब सखी सयानी,
सिय हिय अति उत्कंठा जानी।
एक कहे नृप सुत तेइ आली,
सुने जें मुनि संग आये काली॥

उसकी बात सुन कर सब चंचल सखियां बड़ी खुश हुईं। सीता जी के मन में गुदगुदी सी पैदा हुई। उनके मन की बात ताड़ कर एक सहेली बोली, "हे सखी! सुना है कि कल मुनि विश्वामित्र के साथ दो राजकुमार आये हैं, ये वही हैं।"

जिन निज रूप मोहिनी डारी,
कीन्हें स्वबस नगर नर नारी।
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू,
अवसि देखिये देखन जोगू॥

"इन दोनों ने अपने रूप की मोहिनी डाल कर नगर के सब नर-नारी अपने बस में कर लिये हैं। सब पर इनकी सुन्दरता ने जादू कर दिया है। जहां देखो वहां सब लोग इन्हीं दोनों की मोहिनी मूरत देखने में लगे हैं जैसे उन्हें और कोई काम ही नहीं रहा। भला ऐसा क्यों न हो! जो चीज़ देखने योग्य है उसे ज़रूर देखना चाहिये।

फिर हम भी उनके दर्शन करके आंखों को आनंद क्यों न दें। आओ चलें।"

तासु वचन अति सियहि सुहाने,
दरश लागि लोचन अकुलाने।
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई,
प्रीत पुरातन लखे न कोई ॥

उसकी बातों ने सीताजी को मोह लिया और श्रीराम के दर्शन को उनकी आंखें व्याकुल हो गईं। उसी सखी को आगे करके वे दर्शन को चल पड़ीं। यह कौन जाने कि श्रीरामचन्द्रजी का प्रेम उनके मन में कब से था? श्रीरामचन्द्र जी की नज़र सीता जी पर पड़ी।

सुन्दरता कहुं सुन्दर करई,
छवि गृह दीप सिखा जनु बरई।
सब उपमा कवि रहे जुठारी,
केहिं पटतरौं बिदेह कुमारी॥

सीता जी का रूप ऐसा सुंदर है कि उससे खुद सुन्दरता की बड़ाई होती है। उनका रूप मानों सुन्दरता के घर में दीपक की लौ है। सभी उपमाओं को तो कवियों ने साधारण स्त्रियों के लिये प्रयोग करके झूठी कर दिया है, अब मैं सीता जी को किसकी उपमा दूं?

जासु बिलोकि अलौकिक सोभा,
सहज पुनीत मोर मनु छोभा।
सो सब कारन जान विधाता,
फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता ॥

सीताजी की अनोखी सुन्दरता देखकर मेरा मन पवित्र प्रेम से भर गया है। इसका कारण तो भगवान् ही जाने परन्तु मेरे शरीर का दांया अंग फड़क कर किसी अच्छी चीज के मिलने की सूचना दे रहा है।

अब सहेलियां सीता जी को आड़ में से श्रीरामचन्द्रजी को दिखाती हैं।

थके नयन रघुपति छवि देखें,
पलकन्हि हू परिरहिं निमेखें।
अधिक सनेह देह भै भोरी,
सरद ससिहि जनु चितव चकोरी।

श्रीराम की छवि देखते २ सीताजी की आंखें थक गईं और पलकें बन्द होना भूल गईं। प्रेम के बस में होकर उन्हें अपनी सुध-बुध न रही जैसे चकवी सर्दी के ऋतु के चन्द्रमा को देख कर हो जाती है।

सीता स्वयंवर

जनकपुरी के दरबार में देश २ के

राजा-महाराजा और वीर इकट्ठे हैं। सबने धनुष को उठाने की कोशिश की मगर असफल रहे। इस तरह सबके हार जाने पर राजा जनक निराश होकर कहते हैं, अब संसार वीरों से खाली हो गया है। यदि मुझे यह मालूम होता तो मैं कभी यह शर्त सीता के विवाह के लिये न रखता। अब तो सीता कुंवारी ही रहेगी। उसे सुख देना मेरी शक्ति से बाहर की बात है"।

यह सुन कर लक्ष्मण को क्रोध आया। मुनि विश्वामित्र और श्रीराम ने उनके क्रोध को ठंडा किया और ऋषि विश्वामित्र से आज्ञा लेकर श्रीरामजी धनुष उठाने के लिये चले। यह देख कर सीताजी की माता और उनकी सखियां बेचैन होकर सोचने लगीं कि कहां इतना भारी धनुष और कहां यह कोमल लड़का! भला यह इस धनुष को कैसे उठा सकेगा? राजा जनक ने व्यर्थ ही यह शर्त रक्खी।

लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें।
काहुं न लखा देख सबु, ठाढ़े।
तेहिछन राम मध्य धनु तोरा।
भरे भुवन धुनि घोर कठोरा॥
संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहु बलु।

बूड सो सकल समाजु, चढ़ा जो प्रथमहिं मोहबस ॥

श्रीरामजी ने इतनी फुर्ती के साथ धनुष को उठाया, लेत को चढ़ाया और धनुष को ताना कि लोगों को पता भी न चला। उसी क्षण श्रीराम जी ने धनुष को बीच से तोड़ डाला। टूटने की डरावनी आवाज़ से सारा संसार गूंज उठा। शिव जी का धनुष यदि जहाज है तो श्री रामचन्द्र जी का बाहुबल समुद्र है। धनुष टूटने से वह सारा समाज डूब गया जो मोह के वश पहले इस जहाज़ पर सवार था।

धनुष तोड़ते ही सीता जी ने बड़े प्रेम से श्री रामचन्द्र जी के गले में जयमाला डाल दी और दोनों का विवाह होगया।

श्री रामचन्द्र जी सीता जी तथा अयोध्या निवासी बरात के साथ अयोध्या लौटे। कुछ दिनों बाद रामचन्द्र जी के पिता दशरथ जी ने उन्हें युवराज पद देने की सोची थी। उसी मौके पर उनकी छोटी रानी कैकेयी ने कहा, "जो दो वर आप ने मुझे दिये थे उन्हें अब पूरा कीजिये।"

सुनहु प्रानप्रिय भावत जीका।
देहु एक बर भरतहि टीका।

P. SABHA AMBPHAL LIBRARY

माँगऊ दूसरा वर कर जोरी।
पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी॥

हे प्राणप्यारे ! सुनिये ! मुझे भाने वाला एक वर तो यह दीजिये कि भरत को राजतिलक हो और दूसरा वर भी हाथ जोड़कर मांगती हूँ, मेरा मनोरथ पूरा कीजिये—

तापस बेस विसेषि उदासी।
चौदह बरिस राम वनबासी॥

सुनि मृदुबचनभूप हियं सोकू
ससिकर छुअत विकल जिमिकोकू॥

तपस्वियों के वेष में रामचन्द्र जी १४ बरस वन में रहें। कैकेयी के कोमल वचन सुनकर राजा के मन में ऐसा दुःख हुआ जैसे चन्द्रमा की किरणों के छूने से चकवे को होता है।

राजा दशरथ यह सुनकर बेहोश होगये। सारी अयोध्या पुरी पर शोक छा गया। किन्तु पिता के वचन को पूरा करने के लिये श्री रामचन्द्र जी, सीता जी और लक्ष्मण के साथ वन को चले जाते हैं। भरत जी अपने ननिहाल में थे, जब वे वहां से लौटे तो अपनी माता कैकेयी की हरकत पर बहुत दुःखी हुये और श्री रामचन्द्र जी को मनाने वन में जा पहुंचे। भरत ने श्री राम जी

को लौटने के लिये मनाया पर वे राजी न हुये अंत में विदा होते समय—

प्रभु करि कृपा पांवरी दीन्हीं।
सादर भरत सीस धरिलीन्हीं॥

अंत में श्री राम जी ने कृपा कर अपनी खड़ाऊं भरत जी को दे दीं। उन्होंने बड़े आदर के साथ उन्हें अपने सिर पर रखा।

वन से लौट कर भरत जी ने शुभ-समय देख कर

सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि।

प्रभु राम जी की खड़ाऊं को सिंहासन पर विराजमान कराया।

भरत श्री रामचन्द्र जी की खड़ाऊँ को सिंहासन पर रख कर उनके नाम से राज करने लगे।

Sharika Library & Reading
No
Dated
JAMMU.
Sharika Mandir, ...

—:o:—

प्रसिद्ध पुस्तकें

इस पुस्तक माला की निम्न लिखित पुस्तकें बड़ी रोचक और दिलचस्प हैं। इन्हें पढ़कर अपना ज्ञान बढ़ाइये:—

१. रामायण, भाग १, २

२. हातिम ताई, भाग १, २, ३

३. आल्हा ऊदल, भाग १, २

४. शकुन्तला और दुष्यन्त

५. पद्मावत, भाग १, २

६. पंचतन्त्र, भाग १, २

७. अलिफ़ लैला, भाग १, २, ३, ४,

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य चार आने।

मिलने का पता :

मक्तबा जामिआ लिमिटेड, जामिआनगर, देहली

जैयद प्रेस देहली